

रयत शिक्षा संस्था संचलित.

डी .पी .भोसले महाविद्यालय, कोरेगांव

हिंदी विभाग

'घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य'

अंतरविषय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, दि.०१ व ०२ अप्रैल, २०१९

इतिवृत्त

डी.पी.भोसले महाविद्यालय के हिंदी, मराठी और अंग्रेजी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य' विषय पर दि .०१ और ०२ अप्रैल २०१९ को अंतरविषय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में रोमनिया के बुचारिस्ट विश्वविद्यालय की अलिना इस्टॉक प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। अध्यक्ष के रूप में अमरीका के मर्यलैंड विश्वविद्यालय के विजिटिंग प्रोफेसर तथा कोऑर्डिनेटर डॉ .प्रवीण सप्तर्षी थे। इनके अलावा इटली, इंग्लैंड, रूस आदि विभिन्न देशों तथा भारत के विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। समारोह का प्रस्तावना प्रधानाचार्य डॉ .विजयसिंह सावंत जी ने किया।

संगोष्ठी में बीजभाषक के रूप में महाराष्ट्र शासन के घुमंतू जाति और जनजाति आयोग की अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ. सुवर्णा रावळ थी। आपने विश्वभर की घुमंतू जाति और जनजाति की वेदनाओं को वाणी दी। भारतीय शासन द्वारा इन जनजातियों के विकास के लिए बनाई गई योजनाओं की भी जानकारी दी। इसके अध्यक्ष के रूप में प्रधानाचार्य डॉ. विजयसिंह सावंत उपस्थित थे।

भोजनोपरांत बेंगलूर के शशाद्रिपुरम महाविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. उर्मिला पोरवाल जी ने 'घुमंतू समाज की पीड़ा और उनके स्थायित्व में चुनौतियाँ और संभावनाएँ' विषयपर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया की 'घुमंतू समाज के घूमते रहने से आज अगर वे एक ही स्थान पर रुकना चाहते हैं, अपना घर बनाना चाहते हैं, तो कोई भी समाज उन्हें अपने गाँव में जगह नहीं देता। एक स्थान पर न रुकने के कारण ये लोग अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दे सकते। परिणामतः समाज और पिछड़ता चला जाता है। समारोह के अध्यक्ष के रूप में सी .टी .बोरा कॉलेज शिरूर के डॉ .ईश्वर पवार जी थे। आपने 'घुमंतू समाज की पीड़ा और उनके स्थायित्व के सम्बन्ध में सन २००९ से कम किया है। बहुत ही रोचक शैली में आपने जानकारी प्रस्तुत की। इस सत्र की प्रस्तावना तथा अतिथि परिचय की जिम्मेदारी हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ .भोसले एस जी ने निभाई। श्रीमति. आर. के. मुल्ला ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

इस सत्र के बाद शोधलेख प्रस्तुति के लिये तीन सत्रों का आयोजन किया गया।

हिंदी विभागाध्यक्ष



प्रधानाचार्य

डी .पी .भोसले महाविद्यालय ,कोरेगांव

रयत शिक्षा संस्था संचलित.

डी .पी .भोसले महाविद्यालय, कोरेगांव

हिंदी विभाग

'घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य'

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, दि.०१ व ०२ अप्रेल, २०१९



दीपज्वलन करते हुए अतिथि महोदय



अतिथि महोदय जी का स्वागत करते हुए प्रधानाचार्य डा विजयसिंह सावंत



अतिथि महोदय जी कलाकार का स्वागत करते हुए



व्याख्यान देते हुए अतिथि महोदय जी



मार्गदर्शन करते हुए अतिथी महोदय



संगोष्ठी का समापन करते हुए मान्यवर



समारोह में उपस्थित सभी मान्यवर



जनगणनेअभावी भटके विमुक्त उपेक्षित

डॉ. सुवर्णा रावळ; कोरेगावात डी. पी. भोसले कॉलेजात आंतरराष्ट्रीय परिषद



कोंगाव : डॉ. पी. भोसले महाविद्यालयातील परिषदेच्या उद्घाटनप्रसंगी अलिना इन्टॉक, डॉ. सुवर्णा रावळ, डॉ. प्रवीण ममणी, डॉ. विजयसिंह सावंत आदी.

(शेखर समाज : सकाळ छापाधिकेने)

कोंगाव, ता. २६ : गावाठाय्या परिषदेचे सध्दा अल्पे निष्ठे वट्टनर आणे आदीन अवस्थेने भटकेचोच भो भोगाया भटका विमुक्तांचो जगणता हेत नसलामुळे स्वातंत्र्यतरेन आवडो हा समाज उरेशिवर राहिला आहे. असे मन भटका विमुक्त ज्ञानाच्यो अग्रया डॉ. सुवर्णा रावळ यांनी व्यक्त केले.

भटका विमुक्तांचो श्रमसंपूर्णता, रूपा व साहित्य आणे वस्तु सेवाक्याच भरतरे

अर्थव्यवस्थेचोत परिणाम, या विषयवर येवंत डॉ. पी. भोसले महाविद्यालयात आयोजित केलेल्या आंतरराष्ट्रीय परिषदेने त्या वेळार होला. अग्रयास्थाने अनधिकृतत मंगलमचो वृत्तिसिंधीचो डॉ. प्रवीण ममणी हेले. डॉ. रावळ म्हाल्या, "या वेळामध्ये कोमल्याच वेळार स्थान दिवंत तो नसलेल्या अवयं ज्ञाने, ज्ञानाचो या भटके विमुक्त आले. प्रामांचो, इश्यांचो तरेच को व्यवस्थेचोत अरेक ज्ञाने, ज्ञानाचो ज्ञानाचो ज्ञाने; पंतु भटका विमुक्तांचो जगणता हेत नसलामुळे

आवडो हा समाज उणेकच आहे." हमारिचतरेन वृत्तिसिंधी विद्यालयांतले अलिना इन्टॉक म्हाल्या, "साहित्य म्हायत अस्तित्व टिकवुन असलेलो जिमी व सिद्धेचो ज्ञाने, ज्ञानाचो मयुक्ता आदरेंक आहे. या पत्रवेपुनार हमारिचो जिमी भारतंतले जिमी आणे सिद्धेचो ज्ञाने, ज्ञानाचो आवडो भटकेचो ज्ञाने ज्ञान आहे. तरेच अस्तित्व समाजजिव्यमयेने नकारल्याने त्यांचो अरेक मयुक्तांचो मंगल करवा लागत आहे. त्यामुळे आरस मवतांचे मार्याचिक धार ठेवुन

या ज्ञाने, ज्ञानाचो विकसनाच्यो प्रवृत्त अग्रयाच्यो प्रयत्नांचोत लोले पाहिजे." आदुनेलाच्यो ज्ञाने व साकारिक धारेंगोयचो तरेच समाजजिवन व मयुक्तांचो अभ्यास मंगोपतत्परक पादतरेन होवचो आवयकरता असल्याचो डॉ. ममणी यांचो यवेचो मंगलक.

परिषदेने अग्रया व रात शिसप मयुक्तेचो मयुक्तांचे प्रवर्तणे डॉ. विश्वसिंह मवते यांचो प्रस्ताविक केले. परिषदेने इश्यांचो मार्याचिक फेडेंसो, हमारिचच्या मार्याचो रेस्टू, शिु सिचा, क्माराडिया मके,

लसो घेसले, रेश्याच्यो नदालिया कोड्याके, इन्डियन लेखक टोम यूस, डॉ. अनुकुमार रामकर, निचेर विद्यालयांतले समन्यचक डॉ. मंजु वटन उपस्थित हेले. डॉ. बाळासाहेब चव्हाण, डॉ. गजानन भोसले, डॉ.

भावाचन लेकडे यांचो परिषदेमारांत भूमिका म्हाट केले. डॉ. विद्या नावडकर, प्रा. भोमनाच मरने, प्रा. मंगला वारकर यांचो मयुक्तांचेन केले. डॉ. विजय पाडकर यांचो आभार मानले.